54

प्रेम करने की चुनौती

(रोमियों 12:9-13)

''प्रेम करने की परमेश्वर की बुलाहट'' पर अपने प्रवचन का परिचय देते हुए लूक हार्टमैन ने अपना वचन पाठ पढ़ा और फिर कहा, ''इस वचन में हमें बाइबल में प्रेम की सबसे बढ़िया परिभाषा मिलती है।''[1] आपको क्या लगता है कि वह किस वचन की बात कर रहा था? 1 कुरिन्थियों 13 की जो ''बाइबल का प्रेम का अध्याय'' है? नहीं भाई हार्टमैन की बात कर रहा था, जिसका आरम्भ इन शब्दों से होता है: ''प्रेम निष्कपट हो'' (आयत 9क)। रोमियों 12:9-16 के अपने अध्ययन में मैं इस बात से प्रभावित था कि कितने ही लेखकों का मानना है कि ये शब्द अगली आयतों के विषय का परिचय देते हैं।

बाइबल के विद्वानों ने प्रेम की परिभाषा बताने के प्रयास किए हैं, परन्तु पौलुस और परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों ने प्रेम को इतना *परिभाषित* नहीं किया, जितना इसका *विवरण* दिया है। वे हमें बताते हैं कि प्रेम क्या *करता* है, प्रेम विभिन्न परिस्थितियों में कैसे *काम करता* है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 13 में यही किया; रोमियों 12:9-16 में भी उसने यही किया। ''प्रेम करने की चुनौती'' पर विचार में इस पाठ में पहली पांच आयतों का अध्ययन करेंगे।

प्रेम गम्भीर है[2] (12:9)

सच्चा प्रेम

हमारा वचन पाठ आरम्भ होता है, ''प्रेम निष्कपट हो'' (आयत 9क)। ''प्रेम'' के लिए इस्तेमाल हुआ शब्द *agape* है। *Agape* अर्थात वह प्रेम, जो प्रियजनों की बेहतरी चाहता है, वह प्रेम जो स्वयं परमेश्वर की विशेषता दर्शाता है, सबसे बढ़िया किस्म का प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। यहां तक रोमियों की पुस्तक में हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम *अगापे* एक ही बार लागू हुआ है (5:5, 8; 8:35, 39)। यहां पौलुस ने कहा कि हमें एक-दूसरे के लिए वैसा ही प्रेम रखना आवश्यक है। एंडरस नाइग्रिन ने लिखा है, ''मसीह की देह में प्रेम ... लहू का संचार है, जिसके द्वारा इसके सभी अंग और सदस्य एक-दूसरे से जुड़े और बंधे हैं।''[3]

Agape प्रेम कैसा है? पौलुस ने पहले कहा कि यह ''निष्कपट'' होना चाहिए।[4] यूनानी धर्मशास्त्र में ''निष्कपट'' (*anupokrisis* से) ''कपट'' (*hupokrisis* से) पहले नकारात्मक (*a* के साथ *n*) के लिए शब्द है। पौलुस के समय में *hupokrisis* का इस्तेमाल मंच पर किसी कलाकार के विवरण के लिए किया जाता था, जिसने मुखौटा पहना हो और वह, वह बनने का ढोंग कर रहा हो, जो वास्तव में वह नहीं होता।[5] JB में है, ''अपने प्रेम को बहाना न बनने दो।'' ''दिखावे का प्रेम'' पर विचार करते हुए मेरा ध्यान यहूदा की ओर जाता है, जिसने गाल पर चुम्मे के साथ यीशु को पकड़वाया था (लूका 22:47, 48)। कुछ लोग चाहते हैं कि उन्हें प्रेम करने

वाले लोगों के रूप में जाना जाए। जिस कारण वे प्रेम का ''मुखौटा पहन लेते'' हैं चाहे उनके मन अछूते ही रहे हों। पौलुस ने अपने पाठकों से ऐसे न बनने का आग्रह किया। ''[अपने] प्रेम को केवल बाहरी दिखावा न बनने दो'' (CJB)।

तर्क करने वाला प्रेम

सच्चा प्रेम होने का क्या अर्थ है? आयत 9ख में पौलुस ने एक उदाहरण दिया: ''बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो।'' कई साल पहले आमोस ने लिखा था, ''बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रखो'' (अमोस 5:15क)। इससे कइयों को हैरानी होगी कि पौलुस ने *प्रेम* करने की शिक्षा के साथ *घृणा* करने की आज्ञा दी। परन्तु जैसा कि किसी ने कहा है, सच्चा प्रेम ''केवल फूहड़ भावुकता का'' नहीं है। हम किसी चीज़ से तब तक प्रेम नहीं रखते, जब तक हम उसके विपरीत से घृणा न करें। गम्भीर प्रेम बुराई से घृणा करता है जबकि उससे जुड़ा रहता है जो भला है।

यूनानी शब्दों का अनुवाद ''घृणा'' और ''लगे रहना'' मज़बूत शब्द हैं। ''घृणा'' *apostugeo* से लिया गया है जो *apo* से बढ़ने वाली ''घृणा'' (*stugeo*) के लिए शब्द है। *Apostugeo* का अर्थ है[6] ''घृणा करना, तुच्छ जानना, तंग आना, से ऊबकर मुड़ जाना।'' जिम मैक्विगन ने ''पवित्र घृणा'' और ''ईश्वरीय घृणा'' वाक्यांशों का इस्तेमाल किया है।[7] बुराई का इतना प्रसिद्ध हो जाना सम्भव है कि हम इससे सम्बध न हों। एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि ''अपने साथ ऐसा न होने दो!''[8]

हमें बुराई से घृणा क्यों करनी चाहिए? क्योंकि बुराई परमेश्वर और उसकी इच्छा के विरुद्ध है क्योंकि बुराई असंख्य हज़ारों लोगों के जीवनों को नष्ट कर देती है; क्योंकि बुराई लोगों को नरक में ले जाती है। शायद मुझे यह विचार जोड़ना चाहिए कि बुराई से घृणा करो, परन्तु लोगों से घृणा न करो यीशु ने कहा, ''अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो'' (मत्ती 5:44)। डॉक्टर को कैंसर से घृणा हो सकती है, परन्तु वह अपने मरीज़ों से घृणा नहीं करता जिन्हें कैसर है।

इसके अलावा ''भलाई में लगे रहना'' है। ''लगे रहना'' का शब्द *kollao* से लिया गया है जिसका अर्थ ''तेज़ी से जुड़ना, जोड़ना, मिलाना ... (*kolla* से, 'ग्लू')।''[9] CEV में है ''जो भी अच्छा है उस सबसे *चिपके* रहो।'' बुराई से घृणा करना और भलाई में लगे रहना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। फिर मैं ज़ोर देता हूं कि हम तब तक वास्तव में एक चीज़ से प्रेम नहीं रखते जब तक उसकी विरोधी चीज़ से घृणा करके उसे नष्ट नहीं कर देते।

संसार के जिस भाग में मैं रहता हूं वहां, हम अक्सर कहते हैं, ''प्रेम अंधा होता है।'' प्रेम इस बात में अंधा हो सकता है कि इसे उसकी गलतियां दिखाई न दें, जिससे प्रेम किया जाता है (1 पतरस 4:8), परन्तु सच्चा प्रेम इस बात में अंधा नहीं है कि क्या बुरा है और क्या अच्छा है। संसार सही और गलत के बीच किसी भी अन्तर को मिटा डालने की कोशिश करता है, परन्तु *अगापे* प्रेम ऐसा नहीं करता। यह ज़ोरदार ढंग से उसका विरोध करता है जो बुरा है और उससे लगा रहता है जो उससे अच्छा है।

प्रेम निःस्वार्थ है (12:10)

आयत 10 में पौलुस इस बात की ओर मुड़ गया कि प्रेम अन्य मसीही लोगों से क्या सम्बन्ध रखता है: ''भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।'' परमेश्वर हमें आत्मकेन्द्रित नहीं बल्कि दूसरों पर केन्द्रित बनाना चाहता है।

स्नेही प्रेम

9 और 10 आयतें नये नियम में मिलने वाले ''प्रेम'' के लिए तीन शब्दों का शो केस हैं।[10] *agape, philia* और *storge*. *Agape* आयत 9 में मिलता है और *philia* और *storge* का इस्तेमाल मिश्रित शब्दों में किया गया है। *Philia* का सम्बन्ध हार्दिक प्रेम से है, जबकि *storge* का अर्थ परिवार के सदस्य के लिए प्रेम है।[11] रोमियों 1:31 में हम ने *storge* का नकारात्मक रूप देखा था, जिसका KJV में ''बिना स्वाभाविक स्नेह'' के अनुवाद किया गया है। NASB में उस आयत में ''प्रेम न करने वाला'' है।

आयत 10 में ''स्नेह रखो'' शब्द *philostorgos* से लिया गया है जो *philia* (*philos*) के साथ *storge* का एक रूप है।[12] ''भाइचारे के प्रेम'' के लिए शब्द *philadelphia* से लिया गया है जो *phileo* (*philia* का क्रिया रूप) के साथ *adelphos* (''भाई'') से लिया गया है। दोनों शब्द कलीसिया के *परिवार* के पहलू पर ध्यान दिलाते हैं जिसमें परमेश्वर हमारा पिता है और हम भाई और बहनें हैं। अन्य धर्म साथी लोगों को ''भाई'' बताते हैं, परन्तु जहां तक मुझे मालूम है केवल मसीहियत में ही सदस्यों को एक दूसरे से भाइयों की तरह *प्रेम* करने की आज्ञा दी गई है। आइए इस सब को रोमियों के नाम पौलुस के पत्र के संदर्भ में रखते हैं: पौलुस यहूदी मसीहियों तथा अन्यजाति मसीहियों को चाहता था कि वे एक दूसरे को *परिवार* के रूप में देखें। मसीह भाई और बहन होने के नाते उन्हें एक दूसरे से *स्नेह करना* आवश्यक था। उन्हें एक दूसरे की *भलाई की तलाश* करनी थी। यीशु ने कहा, ''यदि आपस में मेल रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो'' (यूहन्ना 13:35)।

स्वार्थहीन प्रेम

उस प्रेम और समर्पण की किस्म के उदाहरण के रूप में जो पौलुस के मन में था, उसने कहा, ''परस्पर आदर में एक दूसरे से बढ़ चलो'' (रोमियों 12:10ख)। आपसी स्नेह को आपसी आदर में दिखाया जाता है। ''आदर'' *time* (उच्चारण ''टाइमे'') से लिया गया है जो ''मुख्यतया 'महत्व देना' है।''[13] इसका सम्बन्ध दूसरे के लिए सम्मान के साथ सराहना करना है और उस सराहना की *अभिव्यक्ति* है। ''बढ़ चलो'' *proegeomai* से लिया गया है जिसका अर्थ दूसरों का आदर करने में ''आगे जाना और आगे [बढ़ जाना]''[14] है। फिलिप्पियों 2:3 में पौलुस ने लिखा, ''... दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।''

विलियम बार्कले ने अवलोकन किया, ''कलीसियाओं में उठने वाली आधी से अधिक समस्याएं अधिकारों और विशेषाधिकारों और प्रतिष्ठा से है। किसी को उसकी जगह नहीं दी गई है; किसी की उपेक्षा की गई है या धन्यवाद नहीं किया गया।''[15] पौलुस के अनुसार हमें सम्मानित किए जाने की चिंता नहीं होनी चाहिए; हमें दूसरों को आदर देने पर ध्यान देना चाहिए। जे. बी.

फिलिप्स ने प्रेम के इस गुण को इस प्रकार व्यक्त किया है: ''दूसरे आदमी को श्रेय लेने देने की तैयारी।'' प्रेम ''अहंकार'' में नहीं बल्कि ''दूसरे को ऊंचा उठाने'' में है। प्रेम नि:स्वार्थ है।

प्रेम उत्साहपूर्ण है (12:11)

आयत 11 में पौलुस इस ओर मुड़ गया कि प्रेम प्रभु के लिए हमारी सेवा को कैसे प्रभावित करता है। उसने कहा, ''प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।'' यह *अगापे* प्रेम की तीसरी विशेषता उत्साह का सुझाव देता है।

प्रयत्नशील प्रेम

''आलसी'' यूनानी भाषा में *okneros* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''धीमा; सुस्त, ढीला, निष्क्रिय।''[16] इसे प्रतिदिन के शब्दों में रखें तो *okneros* का अर्थ *आलसी* होना है। एक तोड़े वाले आदमी को जिसने अपने तोड़े को मिट्टी में दबा दिया था। उसे ''दुष्ट, *आलसी* दास'' (मत्ती 25:18, 26) कहा गया था। कहा जाता है कि ''आलसी मसीही'' शब्दों का विरोध है।

हमें प्रयत्नशील होना चाहिए न कि आलसी। ''प्रयत्न'' शब्द *spoude* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''गम्भीरता, जुनून।''[17] मसीही व्यक्ति प्रभु के लिए सेवा के विषय में सुस्त नहीं बल्कि जुनून से भरा है। NCV में है ''सुस्त न बनो बल्कि कठिन परिश्रम करो।'' यदि हम प्रभु से प्रेम करते हैं जिसने हमारे लिए इतना कुछ किया है, तो हम और किसी तरह के कैसे हो सकते हैं?

उन्मादी प्रेम

पौलुस ने आगे कहा कि हमें ''आत्मिक उन्माद में भरे होना चाहिए'' (आयत 11ख)। ''उन्माद'' zeo के एक रूप का अुनवाद है जिसका अर्थ है ''गर्म होना, उबालना।''[18] बार्कले के अुनवाद में है ''अपनी आत्मा को उबलते प्वाइंट तक रखो।''[19]

इस बात पर असहमति पाई जाती है कि अंग्रेज़ी का ''spirit'' शब्द छोटे ''s'' से आरम्भ होना चाहिए या बड़े ''S'' से। बड़े ''S'' वाला बड़ा अनुवाद केवल RSV ही है;[20] जिसमें यह चौंकाने वाली शब्दावली है: ''आत्मा के साथ प्रदीप्त हो जाओ।'' इस विशेष अध्याय में पौलुस का ज़ोर उस पर उतना नहीं है जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है जितना इस पर कि हमें परमेश्वर के लिए क्या करना है, इसलिए सम्भवतया छोटा ''s'' ही सही होगा। ''आत्मिक उन्माद'' होने के विचार को व्यक्त करते कई अनुवाद इस प्रकार हैं:

> अपना आत्मिक जोश बनाए रखो (NIV)।
>
> आत्मिक तौर पर जोशीले रहो (मेकोर्ड)।
>
> आत्मा की आग को जलता रहने दो (फिलिप्स)।

जब तक हम परमेश्वर और उसके आत्मा के निकट नहीं रहते, हमारा जोश ठण्डा रहेगा। उबलते पानी का एक कटोरा आग पर से उतार लें तो यह उबलना बंद कर देगा। हमारा प्रेम केवल तब तक जोशीला रहेगा जब तक हम बाइबल अध्ययन, प्रार्थना और प्रेम करने वाले, जोशीले मसीही लोगों

की संगति के द्वारा प्रभु की नज़दीकी में बने रहेंगे।

सेवा करने वाला प्रेम

प्रेम में किस बात का जोश है? यह आयत इन शब्दों के साथ समाप्त होती है: ''प्रभु की सेवा करते रहो'' (आयत 11ग)। मैंने लोगों को धन कमाने के लिए उत्तेजित होते, आने वाले सफ़र के लिए और यहां तक कि आने वाली खेलों के लिए उत्तेजित होते देखा है।[21] परन्तु अधिकतर लोग सेवा करने की बात पर इतने जोश में नहीं आते। वह देर तक काम करने, ऐसे गंदे काम करने पर जिन्हें कोई और करना न चाहता हो, या गुमनाम रहने पर उत्तेजित नहीं होते। प्रेम जोश से भरा हो सकता है क्योंकि सेवा *प्रभु* के लिए है जो हम से प्रेम करता है, जिसने अपने आपको हमारे लिए दे दिया और जो हमें दिन प्रतिदिन मज़बूत करता है।

प्रेम सुसंगत है (12:12)

बुरे समय आने के बारे में क्या विचार है? (वे तो *आएंगे।*) जब सब कुछ ठीक ठाक चल रहा हो तो जोश में आना आसान होता है; जब सब कुछ ठीक न हो तो यह कठिन होता है। आयत 12 में पौलुस ने *अगापे* प्रेम की तीन विशेषताएं बताई जो इसे धूप और छांव के दिनों में सुसंगत बने रहने के योग्य बनाती हैं।

आशापूर्ण प्रेम

पहली बात तो यह कि चाहे जो भी हो जाए, प्रेम आशा से भरा है। आयत 12 आरम्भ होती है, ''आशा में आनन्दित रहो।'' आज का दिन चाहे बुरा हो, परन्तु प्रेम कोई आशा (पक्की उम्मीद[22]) है कि कल बेहतर ही होगा। अध्याय 8 में पौलुस ने कहा कि ''इस समय के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली हैं, कुछ भी नहीं हैं'' (आयत 18)। प्रेम के पास आनन्द करने का कारण रहता ही है। लियोन मौरिस ने लिखा है:

> आरम्भिक मसीही लोगों को इस संसार में आनन्द करने या आशा रखने का कम कारण था, परन्तु वे प्रभु में सदा आनन्दित रहते थे (फिलिप्पियों 4:4) और जानते थे कि मसीह उन में, ''महिमा की आशा'' (कुलुस्सियों 1:27)। ... आशा [मसीही व्यक्ति को] उसकी वर्तमान कठिन परिस्थितियों से उपर उठता है और इसका स्पष्ट परिणाम अनन्द करना है।[23]

दृढ़ प्रेम

क्योंकि प्रेम आशा में आनन्दित होता इसलिए यह ''क्लेश में स्थिर'' है (आयत 12ख)। अनुवादित शब्द ''क्लेश'' (*thlipsis*) का मूल अर्थ ''दबाव'' अर्थात वह दबाव है जो ''आत्मा पर बोझ डालता है।''[24] पौलुस के समय में मसीही लोग समाज का छोटा सा भाग थे जो सरकारी अधिकारियों के फरमानों का निशाना थे और धार्मिक शत्रुओं का आसान शिकार मसीही व्यक्ति के लिए क्लेश जीवन की सच्चाई था (दखें प्रेरितों 14:22)। इस क्लेश के बीच, प्रेम स्थिर रह सकता था। ''स्थिर'' (*hupomone* से) का अर्थ ''के अधीन रहना'' है (*hupo* [''अधीन''] के साथ *meno* [''रहना'']).[25] प्रेम हार नहीं मानता; यह हमें अपने विश्वास को त्यागने से रोकता है जब

जीवन के दबाव हम पर प्रभावी प्रतीत होते हैं।

प्रार्थनापूर्ण प्रेम

आशा और स्थिरता से भरे होने का एक महत्वपूर्ण कारक प्रार्थना है। प्रार्थना इसे करने वाले की जीवन रेखा है। प्रेम हमें ''प्रार्थना में नित्य लगे'' रहना सिखाता है (आयत 12ग)। ''लगे रहो'' का अनुवाद *proskartereo* से किया गया है जो *pros* से गूढ़ हुआ ''मज़बूत होना'' या ''सहना'' (*kartereo*) के लिए शब्द है।[26] इसका अर्थ ''डटे रहना, बने रहना'' है।[27] प्रार्थना प्रेम के लिए वैकल्पिक बात नहीं है; यह आवश्यकता है। कहीं और पौलुस ने लिखा है, ''निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)।

प्रेम सहायक है (12:13)

आयत 10क में पौलुस ने कहा कि मसीही लोगों को ''भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया'' रखनी चाहिए। आयत 13 में उसने भाईचारे का प्रेम दिखाने के दो ढंग बताए हैं।

बांटने वाला प्रेम

पहले पौलुस ने कहा, ''पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उस में उन की सहायता करो'' (आयत 13क)। ''सहायता करो'' (*koinoneo* से) शब्दों के *koinonia* के परिवार का भाग हैं, जिसका अर्थ ''संगति, मिलकर बांटना।'' *koinoneo* का विचार ''मिलकर बांटना'' है।[28] वचन में चिंता जरूरतमंद ''पवित्र लोगों'' (साथी मसीही लोगों)[29] की है। प्रेम में हर किसी की देखभाल करना शामिल है, परन्तु मसीह में भाइयों और बहनों का विशेष ध्यान होता है। ''जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; *विशेष करके* विश्वासी भाइयों के साथ'' (गलातियों 6:10)। आयत 13 में NIV में है ''परमेश्वर के लोगों के साथ जिन्हें आवश्यकता है बांटें।'' ध्यान दें कि वचन कहता है ''पवित्र लोगों की आवश्यकताएं [*chreia* का बहुवचन]'' न कि ''इच्छाएं'' ''आवश्यकताओं'' में रोटी, कपड़ा और मकान तथा प्रेम आदि शामिल हैं।

कलीसिया सांसारिक संगठनों से कई तरह से अलग है। इसके अलग होने की एक बात तो यह है कि आम तौर पर लोग सांसारिक संगठनों से जुड़े होते हैं जिसके लिए उन्हें उनमें से निकाला जा सकता है। प्रेम करने वाले मसीही जो कलीसिया बनते हैं इस बात का अधिक ध्यान रखते हैं कि वे दूसरों के लिए क्या कर सकते हैं। लूक हार्टमैन ने प्रेम के इस गुण को ''अपने खर्चे पर दूसरों की भलाई की इच्छा करना'' कहा है।[30]

सत्कारशील प्रेम

पौलुस ने प्रेम करने वाले मसीही लोगों के ''एक दूसरे के प्रति समर्पित'' होने का दूसरा ढंग बताया: ''पहुनाई करने में लगे'' रहना (आयत 13ख)। ''पहुनाई'' *philoxenia* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''अजनबियों का प्रेम'' (*philos* [''प्रेम''] के साथ *xenos* [''अजनबी''])।[31] ''पहुनाई'' का अर्थ किसी विशेष शाम के लिए नज़दीकी दोस्तों का किसी के घर में जाना नहीं है बल्कि यह परदेशियों के लिए अपने घर को खुला रखने का सुझाव देता है। *Philoxenia*

इब्रानियों 13:2 में मिलता है जहां हमें समझाया गया है, ''पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है।''

संदर्भ में ज़ोर पवित्र लोगों (मसीही लोगों) को सत्कार दिखाने पर है जिन्हें हम अच्छी तरह नहीं जानते या पहले कभी नहीं मिले हैं। जे. बी. फिलिप्स ने आयत 13 को इन शब्दों में लिखा है: ''जरूरतमंद मसीही साथियों को मुफ़्त में दो, उन्हें जिन्हें आवश्यकता है खाना या बिस्तर कुड़कुड़ाते हुए कभी न दो।'' अतिथिसत्कार नये नियम के समयों में आवश्यकता थी। सराय बहुत कम होती थीं और दूर-दूर होती थीं और जो थीं भी वे आमतौर पर गंदी और खतरनाक थीं। आज संसार के अधिकतर भागों में यह स्थिति बदल गई है, परन्तु ''पहुनाई'' शब्द में मिलने वाली गर्मजोशी से लगाव की आवश्यकता आज भी है। पहुनाई करने वाले होना ऐल्डरों की योग्यताओं में से एक है (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8)। वर्षों से मेरे परिवार ने और मैंने संसार के मसीही लोगों की पहुनाई का आनन्द लिया है अर्थात मसीह में उन भाइयों और बहनों द्वारा जिन्हें हम ने पहले कभी नहीं देखा था।

ध्यान दें कि हमें पहुनाई ''करने वाले'' होना आवश्यक है। ''करना'' *dioko* से लिया गया है जिसका अनुवाद रोमियों 9:30, 31 में ''खोज'' किया गया है। रोमियों 12:13 में AB में ''पहुनाई करने की खोज'' है। *Dioko* शब्द में *सरगर्मी* से खोज करने का संकेत मिलता है।[32] प्रेम पहुनाई दिखाने के लिए अवसरों की *प्रतीक्षा* नहीं करता; यह उत्सुकता से अवसर *की तलाश* में रहता है।

सारांश

प्रेम का अपना अध्ययन हम '' 'एक मसीही कैसा लगना चाहिए?' '' (रोमियों 12:14-16) पाठ में जारी रखेंगे। इस वचन में तीन अन्तिम आयतें संकेत देती हैं कि प्रेम अनुग्रहकारी (आयत 14), सहानुभूति रखने वाला (आयत 15), और दीन (आयत 16) है। अन्त में अपनी परख करने का समय है:

- प्रेम गम्भीर है। क्या मैं हूं?
- प्रेम निस्वार्थ है। क्या मैं हूं?
- प्रेम उन्मादी है। क्या मैं हू?
- प्रेम दृढ़ है। क्या मैं हूं?
- प्रेम सहायक है। क्या मैं हूं?

शायद हम में से हर किसी को प्रार्थना करने की आवश्यकता है, ''हे मेरे परमेश्वर मुझे और प्रेम करने वाला व्यक्ति बनने में सहायता कर!''

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

जब आप इस प्रवचन का इस्तेमाल करें तो ज़ोर दें कि दूसरों के लिए हमारा प्रेम परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम से बहुत नज़दीकी है (1 यूहन्ना 4:20) और परमेश्वर के लिए अपने प्रेम को

व्यक्त करने का एक ढंग वह करना है जो उसने हम से करने को कहा है (यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:3)। बाहरी पापियों (जो कभी मसीही नहीं बने हैं) को बताएं कि परमेश्वर ने उन्हें क्या करने को कहा है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) और भटके हुए मसीही लोगों को बताएं कि प्रभु उनसे क्या करवाना चाहता है (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)। कई लेखक रोमियों 12:9-16 में पाई जाने वाली प्रेम की बारह से बीस विशेषताएं बताते हैं। मैंने प्रत्येक आयत की समीक्षा एक ही शब्द से करना चुना।

''आप विशेष हैं! (12:3-8)'' की तरह मैं इस वचन पाठ की हर आयत पर रुककर एक अलग पाठ लिख सकता था। मेरी टिप्पणियां जान-बूझकर संक्षिप्त रखी गई हैं। वचन की उन सच्चाइयों को चुनें, जिनकी आपके सुनने वालों को सबसे अधिक आवश्यकता है: फिर उन्हें विस्तार दें और उन्हें लागू करें।

रोमियों 12:14-21 पर हमारी दो प्रस्तुतियों को ''प्रेम करने की चनौती'' या ''मसीही व्यक्ति कैसा लगता है?'' में से किसी शीर्षक में मिलाया जा सकता है। यदि आप प्रेम के विषय का इस्तेमाल करते हैं, तो अन्तिम तीन बातें इस पाठ के सारांश में बताई हो सकती हैं: प्रेम अनुग्रहकारी है (आयत 14), सहानुभूति करने वाला है (आयत 15) और दीन है (आयत 16)।

डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने रोमियों 12:9-21 के अपने ढंग को ''अच्छाई और बुराई'' नाम दिया। (ध्यान दें कि वचन में ''भलाई'' और ''बुराई'' शब्द आम तौर पर कैसे मिलते हैं।) ब्रिस्को ने तीन मुख्य बिन्दु बताए: (1) भलाई, बुराई और, संगति (आयतें 9-12); (2) भलाई, बुराई और भण्डारीपन (आयतें 13-16); (3) भलाई, बुराई और कठिनाई (आयतें 17-21)।[33]

टिप्पणियां

[1]लूक हार्टमन, ''गॉडस कॉल टु लव,'' ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 17 जुलाई 2005 को दिया गया प्रवचन। [2]इस पाठ में दिए गए मुख्य बिन्दु 1 कुरिन्थियों 13 से मेल खाते हैं। आप इस पाठ में से सिखाते या प्रचार करते समय उस अध्याय के भागों को उद्धृत कर सकते हैं। [3]एंडर नायग्रेन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (फिलाडेल्फिया: फोर्टलैस प्रैस, १९49), 424. [4]KJV में ''कपट'' की जगह ''विषमीकरण'' है। ''विषमीकरण'' का अर्थ है ''दिखावा,'' परन्तु आज इस शब्द का इस्तेमाल आम नहीं होता। NKJV में, ''कपट'' है। [5]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस पब्लिशर्स, 1985), 316. [6]वही, 1. [7]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोनटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 367. [8]बुराई से घृणा करने पर अतिरिक्त वचनों के लिए, देखें भजनसंहिता 97:10; 119:104; नीतिवचन 8:13; इब्रानियों 1:9. [9]वाइन, 104. KJV में ''चिपकना'' है। मत्ती 19:5 में पति और पत्नी के एक-दूसरे से मिलने के लिए यही यूनानी शब्द इस्तेमाल किया गया है। [10]''प्रेम'' के लिए एक चौथा यूनानी शब्द *eros* है, जो शारीरिक प्रेम (वासना सहित) को दिखाता है। वचन के अनुसार विवाह के संदर्भ में शारीरिक प्रेम सही है बल्कि इससे इसके लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है (1 कुरिन्थियों 7:2, 3; इब्रानियों 13:4), परन्तु *eros* के इतने अधिक बुरे अर्थ थे कि नये नियम के लेखकों ने इसका इस्तेमाल करने से परहेज ही रखा।

[11]इन तीनों शब्दों का विस्तृत अध्ययन डेविड रोपर, *गेटिंग सीरियस अबाउट लव* (सीक्रेसी, आरकैंसा: रिसोर्सिस पब्लिकेशंस, 1992), 13-30. [12]वाइन, 16. [13]वही, 310. [14]वही, 483. [15]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 164. [16]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुअल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 286. [17]वाइन, 169. [18]वही, 233. [19]बार्कले, 163.

[20]जिन अनुवादों को मैंने देखा है उनमें से केवल दो और अनुवादों में बड़ा ''S'' है CEV और AB.

[21]जहां आप रहते हैं वहां इस वाक्य को अपने अनुवादों में बदल लें। [22]रोमियों 4:18 और 5:4 में बताए अनुसार ''आशा'' पर चर्चाओं की समीक्षा करें। *रोमियों, 2* पुस्तक में ''अब्राहम के चिह्नों पर चलना [4:17ख-25]'' और ''अपने बच्चों को सिखाने के लिए तीन सच्चाइयां [5:1-8]'' पाठों में देखें। [23]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 447. [24]वाइन, 17. रोमियों की पुस्तक में हम पहले कई बार ''कष्ट'' शब्द देख चुके हैं 2:9, 5:3 और 8:35 पर टिप्पणियां देखें। [25]वही, 462. *रोमियों, 1* पुस्तक में ''क्या आप न्याय के दिन के लिए तैयार हैं? (2:1-16)'' में ''धीरज'' टिप्पणियों पर विचार करें। [26]NASB में 10 और 12 दानों आयतों में अंग्रेज़ी में ''devoted'' शब्द है; परन्तु जैसा कि उन आयतों पर टिप्पणियों से संकेत मिलता है, आयत 12 में आयत 10 से अलग यूनानी शब्द इस्तेमाल हुआ है। [27]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रेडरिच, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 417. वाइन, 44; डब्ल्यू. ग्रंडमन *''karteréo''*[28]वाइन, 177, 233. [29]*रोमन्स, 1* के पाठ ''आपकी डाक आई है! (1:1-7)'' में शब्द पर नोट्स देखें। [30]हार्टमन.

[31]वाइन, 312 से लिया गया। [32]ज्योफ्री डब्ल्यू ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रेडरिच, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 177 में ''*diṓkô.*'' [33]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 223-230.